विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -२८ -०४ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज सकर्मक क्रिया के बारे में अध्ययन करेंगे

सकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया की परिभाषा

सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है ,उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

दूसरे शब्दों में- जिस क्रिया में कर्म का होना ज़रूरी होता है वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं का असर कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है। सकर्मक अर्थात कर्म के साथ।

जैसे: विकास पानी पीता है। इसमें पीता है (क्रिया) का फल कर्ता पर ना पडके कर्म पानी पर पड़ रहा है। अतः यह सकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण

- रमेश फल खाता है।
- सुदर्शन गाडी चलाता है।
- मैं बाइक चलाता हूँ।
- रमा सब्जी बनाती है।
- सुरेश सामान लाता है।

जैसा कि आप ऊपर दिए गये उदाहरणों में देख सकते हैं कि क्रिया का फल कर्ता पर ना पडके कर्म पर पड़ रहा है। अतः यह उदाहरण सकर्मक क्रिया के अंतर्गत आयेंगे।

सकर्मक क्रिया के भेद

1. एककर्मक क्रिया
2. द्विकर्मक क्रिया
3. अपूर्ण क्रिया

पूर्ण एककर्मक क्रिया: जिस क्रिया के केवल एक कर्म के पुरे होने का पता चलता है उसे पूर्ण एककर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे:

- वह रोटी खाता है।
- श्याम टीवी देख रहा है।

पूर्ण द्विकर्मक क्रिया: द्विकर्मक का अर्थ होता है दो कर्म वाला या दो कर्म सहित। जिस क्रिया के साथ दो कर्मों के पूर्ण होने का पता चलता है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। इसमें पहला कर्म प्राणीवाचक होता है और दूसरा कर्म निर्जीव होता है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे:

- सोहन ने गुरूजी को प्रणाम किया।
- नर्स रोगी को दवा पिलाती है।

अपूर्ण क्रिया: जब क्रिया के होते हुए तथा क्रिया और कर्म के रहते हुए भी अकर्मक और सकर्मक क्रिया स्पष्ट अर्थ न दें वहाँ पर अपूर्ण क्रिया होती है। इनके अर्थों को पूरा करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उसे पूरक कहते है।

जैसे:

- तुम हो – तुम बुद्धिमान हो।
- मैं अगले वर्ष बन जाउँगा – मैं अगले वर्ष